

“शाहजहांपुर शहर की स्थापना और मोहल्लों के नामकरण”**डॉ. विकास खुराना****:: उद्देश्य ::**

जनपद शाहजहांपुर शहर की स्थापना और इसके मोहल्लों के नामकरण में ऐतिहासिक तथ्य है। वर्तमान समय में शहर के अनेक युवा न केवल इनके इतिहास से विस्मृत हैं बल्कि अनेक बार इनके नाम बदलने को लेकर ज्ञापन इत्यादि दिए जाते हैं। इनमें से कई नामों की ऐतिहासिकता रूहेला काल तक जाती है। इस शोध पत्र के जरिए इनके इतिहास को उजागर करना एवं भावी पीढ़ी को उनके वास्तविक इतिहास से परिचित करवाना है।

:: प्रस्तावना ::

प्रस्तुत शोधपत्र शहर शाहजहांपुर की स्थापना तिथि, शहर बसने के समय की परिस्थितियों एवं यहां के मोहल्लों के नामकरण से संबंधित है। भारत गणराज्य के राज्य उत्तर प्रदेश का जनपद शाहजहांपुर भौगोलिक दृष्टि से रूहेलखंड डिवीजन का दक्षिणतम जिला है। इसके पूर्व में जिला लखीमपुर खीरी, दक्षिण में हरदोई तथा फर्रुखाबाद, पश्चिम में बदायूं तथा बरेली, उत्तर में जिला पीलीभीत की बीसलपुर एवं पूरनपुर तहसील स्थित है। शहर शाहजहांपुर इसका मुख्यालय है। ब्रिटिशकाल में इस शहर का विस्तार पांच मील उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम मात्र दो मील था। अवध-रूहेलखंड रेल इसके पूर्व से प्रवेश करते हुए, शहर की उत्तरी सीमा बनाती थी। यह लाइन आज भी है जो शहर तथा शाहजहांपुर कैंट के मध्य सीमा का निर्धारण करती है। शहर की स्थापना मुगल बादशाह शाहजहां के समय वर्ष 1647 ईस्वी में हुई तब यहां एक किला और बीस आराजी भूमि की सनद नवाब दिलावरखान की अर्जी पर नवाब बहादुरखान के नाम की गई।

:: शोधपत्र ::

शाहजहांपुर शहर की स्थापना के संदर्भ में तत्कालीन मुस्लिम स्रोतों यथा तारीख-ए-शाहजहांपुरी, तारीख-ए-मति, आइन-ए-अकबरी, तारीख-ए-मुजप्फरी एवं उनके कुछ पूर्ववर्ती ब्रिटिशकालीन स्रोतों यथा बिशप कार्ल हार्पर के विवरण, ब्रिटिश शासन के गजेटियर तथा उनके आधार पर हाल ही में शहर के इतिहास पर लिखी गई पुस्तक ‘अद्भुत शाहजहांपुर’, इतिहासकार डा. एनसी मेहरोत्रा की पुस्तक ‘शाहजहांपुर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर’ अनेक जानकारीयां उपलब्ध करवाते हैं। आइन-ए-अकबरी के अनुसार सर्वप्रथम अकबर के काल में इसे बदायूं से अलग करके मुगलकालीन जिला जिसे सरकार कहा जाता था घोषित किया गया था। वस्तुतः यह कांट ओ-गोला सरकार थी जो सोलह मील लंबी थी। अकबर के ही एक रिश्तेदार हुसैन खां टुकड़ियां को इसका प्रभार सौंपा गया था। बाद में अकबर उसकी साम्प्रदायिक नीतियों से तंग आ गया और उसे यहां से हटा दिया गया। हुसैन खां के कुमाऊं में युद्ध करते हुए मारे जाने के बाद इलाका पुनः बदायूं इक्ता में मिला दिया गया। प्रख्यात इतिहासकार बदायूंनी यहां शहर काजी के पद पर तैनात थे। इसके बाद शाहजहां के समय ही इसका एक पृथक अस्तित्व सामने आया।

समकालीन मुस्लिम स्रोत बताते हैं कि मुगलिया कैंट के रूप में शहर की स्थापना का उद्देश्य क्षेत्र में मजबूत मुगल नियंत्रण स्थापित करना था। वर्ष 1646 में कांट जोकि शहर मुख्यालय से मात्र 10 किमी. की दूरी पर स्थित है तथा बरेली-लखनऊ हाइवे बनने से पहले जहां से होकर मुगल सड़क दिल्ली को बिलग्राम के रास्ते कन्नौज और अवध से जोड़ती थी पर स्थानीय राजपूतों द्वारा सरकारी खजाने की लूट की गई थी। इससे निपटने के लिए बादशाह द्वारा अपने प्रमुख मनसबदार दिलेर खान को तैनात किया गया था। इस समय शहर में राजपूतों की अनेक गढ़िया मौजूद थी। मुगल सेनाएं तथा स्थानीय राजपूतों द्वारा शहर के उत्तर में स्थित चिनौर गांव में हुई प्रसिद्ध चिनौरगढ़ी की लड़ाई हुई। जिसमें 13000 राजपूत तथा 1100 मुसलमान मारे गए। युद्ध का भाग्य मुगलों के पक्ष में रहा। इससे प्रसन्न होकर बादशाह ने नवाब दिलेरखान को नगर बसाने के लिए बीस आराजी भूमि, चौदह गांव

और एक किला बनाने की अनुमति दी गई। यह अनुकम्पा नवाब दिलेरखान की अर्जी पर दी गई थी। जिसमें नवाब ने अपने वतन के रूप में शाहबाद तथा अपने भाई सराय बादल (जिसे इतिहास बहादुरखान के नाम से जानता है) के नाम से शाहजहांपुर की जागीर प्राप्त की। ख्वाजा बुलंद को शीघ्र हो किले एवं नगर निर्माण हेतु भेजा गया। चूंकि यह शिशमाही जागीर थी और इसका उद्देश्य क्षेत्र में मुगलिया कैंट की स्थापना था को ध्यान में रखकर दोनों भाइयों की कोशिश थी कि अफगानिस्तान के ज्यादा से ज्यादा कबीलों को शहर में लाकर बसाया जाए। अफगानिस्तान का कुल समाज कबीलों के रूप में ही था जिनका स्वयं का पृथक एवं विशद इतिहास और संस्कृति थी, लिहाजा शाहजहांपुर अफगानिस्तान की प्रतिकृति बन कर उभरा। आज भी अनेक कबीले और इलाके जो अफगानिस्तान में हैं, शाहजहांपुर में उनके नाम के मोहल्ले भी बने हुए दिखाई पड़ते हैं।

शहर का पहला मोहल्ला नवाब बहादुरखान के नाम पर ही एक लाख खिरनी के पेड़ों को काट कर बसाया गया बहादुरगंज है। इसी इलाके में नवाब बहादुरखान का प्रसिद्ध मकबरा भी है जो ब्रिटिशकालीन गजेटियर संकलन काल की सबसे ऊंची इमारत थी और तत्कालीन थाना कोतवाली के अंतर्गत आती थी। बाद में अंग्रेजों के शासनकाल में यहां कुछ दुकानें बनवा दी गईं और बहादुरगंज बाजार अस्तित्व में आया। ब्रिटिशकालीन पालिका को इन दुकानों से कुल वार्षिक आय का आठ प्रतिशत प्राप्त होता था। इसके पूर्व में खिरनीबाग मोहल्ला आज भी उस नाम को धारण करते हुए मौजूद है जो खिरनी के पेड़ों की अधिकता क्षेत्र में दिखाता है।

नवाब दिलावर खान जिनका वास्तविक नाम जलाल खान था के नाम पर जलालनगर बजरिया बसा जिसकी तीन शाखाएं - तारीन, महमंद और एमनजई जलालनगर बनी। शहर के अधिकांश मोहल्लों के नाम नवाब बहादुर खान के परिवार उनके सैन्य अधिकारियों और कबीलों के नाम पर हैं। इनमें सुप्रसिद्ध नवाब बहादुर खान के बेटों दिलावर खां, हुसैन खां, फतेह खां के नाम पर दिलवारगंज, हुसैनपुरा और फतेह गंज। परिवार के अहमद खां, मिश्री खां के नाम पर अहमदपुर, मिश्रीपुर। फौज के अफसर शाहबाज खां, लोधी खान के नाम पर शाहबाजनगर, लोदीपुर। दीवान घूरन खां, ख्वाजा फिरोज, रोशन इस्पात खां, गौहर शाह के नाम पर घूरन तलैया, रोशनगंज, गौहरपुरा। नवाब अजीज खान के नाम पर अजीजगंज इत्यादि। नवाब बहादुर खान के परिवार की स्त्रियों के नाम पर बीबीजई, बाडू जई इत्यादि।

शहर के अनेक मोहल्लों के पीछे जई शब्द का प्रयोग है जिसका शाब्दिक अर्थ है - “उनके पुत्र” यह उन कबीलों के नाम पर मोहल्लों के नामकरण दर्शाता है जिनकी स्थापना किसी न किसी ऐतिहासिक पुरुष के नाम पर हुई हो। शहर आने वाले यह कबीले संख्या में कुल 52 थे और इनका अपना पृथक झंडा और चिन्ह था जो मोहल्लों में लगा रहता था। झंडा कलां मोहल्ला जहां मस्जिद झंडा है में सफेद झंडा लगाया जाता था जो यह बताता था कि इस इलाके में जहीं लोग रहते हैं। जहां जंगी पठान शहर के बाहरी इलाकों में सुरक्षा के लिहाज से बसाये गए वहीं शहर के मध्य में समाज के आमिल और काबिल लोगों को बसाया गया था। सफेद झंडा का अभिप्राय इस इलाके में युद्ध न किया जाने की निशानी था।

ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि नवाब बहादुर खान का ऐतबार सूफी सिलसिले में था। वे स्वयं प्रसिद्ध शेख अहमद नागौरी के शिष्य थे। उनके आग्रह पर अनेक सूफी संत शेख उस्मान मतानी, शाह अमान उल्लाह, शाह अब्दुल गनी, शाह सैयद अहमद शहर में आकर बस गए। इनकी मजारें भी शहर में हैं। शेख उस्मान के नाम पर ही शहर का मतानी मोहल्ला है। तारीन एवं एमनजई शब्द के नाम से बने मुहल्ले कबीलों के नाम के ही घोटक हैं। तारीन के शाब्दिक अर्थ बाहरी से है और यह वे अफगान थे जो अफगानिस्तान से निकलकर पंजाब क्षेत्र में रहने लगे थे। आज भी तारीन के नाम पर अफगानिस्तान में एक बड़ा क्षेत्र है। इस कबीले का नामकरण तोर से है नियामतुल्ला द्वारा लिखी गई पुस्तक “तारीख-ए-अफगान” बताती है कि तोर के दो भाई था अदल और अब्दुल। बाद में यह कबीला अनेक धाराओं में बंट गया और इनकी एक शाखा पंजाब के हजाराल क्षेत्र में बस गई जिन्होंने पंजाबी रीति रिवाज अपना लिए। इसी प्रकार खलील शर्की के नाम पर अफगानिस्तान का एक कबीला है। यह शर्की उपजाति है जो कंधार क्षेत्र में वास करती थी। खलील का शाब्दिक अर्थ - ‘सच्चा दोस्त’ और शर्की का अभिप्राय पूर्व से है। इसी प्रकार अफगानों की संस्कृति एवं कार्य क्षेत्र के आधार पर अनेक जगहों के नामकरण हुए।

जैसे हाथी रखने का स्थान हाथीथान, ऊंट बांधने का स्थान सूतरखाना, घोड़ों को प्रशिक्षण देने का स्थान तित्काल के नाम पर टिकली। उत्सवों के लिए रंगीन चौपाल, रंग महला इत्यादि।

शहर के इन कबीलों में एक बड़ा कबीला दिलाजाक है। यह मुख्यतः कलरानी वंश के थे तथा खैबर दर्रे से लेकर सुलेमान घाटी और पेशावर तक अपना प्रभाव रखते थे। गजनी के सुल्तान महमूद की सेना का यही कबीला मुख्य आधार था। 15वीं सदी तक यह पंजाब तक एकछत्र राज कर रहे थे। एक अन्य कबीला यूसुफजई जिन्हें उज्बेगों ने अफगानिस्तान से निकाल दिया था, 16वीं सदी में इनके संरक्षण में पनपे किंतु बाद में दोनों कबीलों में शत्रुता उत्पन्न हो गई। शाहजहांपुर में यूसुफजई और दिलजाक दोनों के ही नाम पर बड़े मोहल्ले बसे हैं। शहर के सिंजई मोहल्ले का नामकरण अफगानिस्तान के सिंजई इलाके से है जो मुख्यता पहाड़ी क्षेत्र कपीसा से है। अफगानिस्तान पर अमरीकी हमलों का सबसे ज्यादा नुकसान इसी क्षेत्र को हुआ। आज अफगानिस्तान के ज्यादातर एथलीट इसी इलाके से हैं। शहर में इसी नाम का एक मोहल्ला स्थापित है जो मुख्य मार्ग पर ही स्थित है। शहर के मुख्य चौराहे अंटा का नामकरण पूर्व दिशा से है जो इसकी किले से स्थिति को दर्शाता है। जबकि कटरा का शाब्दिक अर्थ चौराहे से है। यहां अवध दरबार के मंत्री कुतुबुद्दीन ने कुछ दुकानों का निर्माण करवाया था, जिसके किराए से 927 रुपया 15 आना दरबार को प्राप्त होते थे। इसी प्रकार मुस्लिम समाज के धर्म इस्लाम को ध्यान में रखते हुए अनेक मस्जिदें यहां तामीर हुईं। शहर के आर्किटेक्ट ख्वाजा बुलंद थे उन्हीं के निर्देशन में शहर की पहली मस्जिद काँच की बनी, जामा मस्जिद नवाब अजीजखान द्वारा बनवाई गई तथा अनेक प्रमुख मस्जिदों में सुनहरी मस्जिद शाही मस्जिद इत्यादि ऐतिहासिक हैं। अनेक मदरसों में जामा मस्जिद के पास स्थित एक मदरसा अपने हदीसी ज्ञान के लिए देशभर में प्रसिद्ध था।

शहर के इतिहास पर पहल आधुनिक लेखन बिशप कार्ल हार्पर का है यह प्राप्त मुस्लिम स्रोतों से भी पूर्ण लिखा गया। कार्ल बिशप हार्पर स्वयं 1825 के दौरान शहर आए थे उन्होंने इसे अफगानी संस्कृति का शहर बताया जहां कुएं, घर, इमारतें, पहनावा सभी अफगानी संस्कृति को बयां करती थी। खजूर के पेड़ यहां की खासियत थे। वस्तुतः तकरीबन चार सदियों तक शहर अफगानिस्तान की संस्कृति को ही दर्शाता रहा।

:: उपसंहार एवं निष्कर्ष ::

प्रस्तुत शोध पत्र स्पष्ट करता है कि शहर शाहजहांपुर के मोहल्लों के नामकरण के पीछे एक बड़ी ऐतिहासिकता है। यह नामकरण व्यर्थ नहीं हैं बल्कि इनके अभिप्राय समझे जाने की आवश्यकता है। मुगलकाल के बाद भी ब्रिटिशकाल एवं आजादी के बाद शहर का स्वरूप लगातार बदल रहा है। जहां ब्रिटिशकाल में यहां शाहजहांपुर कैंट की स्थापना हुई वही रेल, केरू कंपनी, सरकारी ऑफिसों की अवस्थापना एवं अन्य सुधार कार्य से अनेक नए मुहल्ले बने। इनके उदाहरण केरूगंज, ओसीएफ स्टेट, ब्रिटिश अधिकारियों के रहने के स्थान सिविल लाइंस, नगर पालिका का इलाका टाउन हॉल इत्यादि प्रसिद्ध हैं। आजादी के बाद पाकिस्तान से आए अनेक पंजाबी शरणार्थियों को भी शहर में बसाया गया। इनकी कुल संख्या पच्चीस सौ के करीब थीं। कैंट क्षेत्र से भूमि लेकर रामनगर, मोहनगंज, कृष्णनगर इत्यादि नए मोहल्ले स्थापित हुए। इन्हीं पंजाबी शरणार्थियों के लिए बाग काट कर गोविंदगंज का बाजार बनाया गया।

काल के चक्र के साथ शहर का स्वरूप बदलता रहा और आज अनेक नई रिहाइशी और आधुनिक कालोनियां जैसे सिटी पार्क, साउथ सिटी, वृंदावन गार्डन इत्यादि अस्तित्व में आए हैं। वर्तमान में शहर का स्वरूप परिवर्तित हो रहा है और अनेक बार अफगानी मोहल्लों के नाम बदलने की भी बात उठती है किंतु हमें समझना होगा कि इतिहास का संरक्षण समय की मांग है और यह ऐतिहासिकता और भविष्य के मध्य सामंजस्य का कार्य करती है।



:: स्रोत ::

1. ब्रिटिश गजेटियर, 1909
2. भू - सेटलमेंट रिपोर्ट, 1839
3. भू - सेटलमेंट रिपोर्ट, 1874
4. जनपद गजेटियर, 1988
5. तारीख - ए - शाहजहांपुरी : शहाबुद्दीन मियां
6. तारीख - ए - मती : मतिउल्लाह साहब
7. नवाब बहादुर खान : जेबा लतीफ
8. शाहजहांपुर ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : डा. एनसी मेहरोत्रा
9. आइन - ए - अकबरी
10. शाहजहांपुर स्थापना से संबंधित प्रपत्र